ShodhShreejan: Journal of Creative Research Insights
January-June 2026 3(1)
https://shodhshreejan.com/

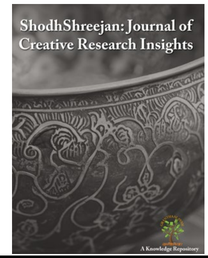

Original Article

PRESERVATION OF THE GHARANA TRADITION IN MUSIC VERSUS MODERN INSTITUTIONAL TEACHING METHODS: A COMPARATIVE STUDY

संगीत में घराना परंपरा का संरक्षण बनाम आधुनिक संस्थागत शिक्षण पद्धतिया: एक तुल्नात्मक अध्ययन

Vilas Palkhe [1*]
[1] Assistant Professor, (Department of Music) Department of Visual and Performing Arts, Mangalayatan University, Besawa, Aligarh, India

ABSTRACT

English: Before the Gharanas, the Guru-Shishya tradition has been prevalent in Indian classical music since ancient times, but in today's changing landscape, the essence of this long-standing tradition has been lost. We certainly need to reflect on each other to preserve our cultural heritage and foster a progressive future for music. Our generation has seen many artists who received education through the Gurukul system and have learned the experimental aspects of classical music from great artists. In the Guru-Shishya tradition, the Guru not only imparted music lessons but also imparted life's philosophy to the disciple, instilling in them various values through this holistic philosophy. Nowadays, the Guru-Shishya relationship is considered greater than that of a father and son, and even the Guru has been elevated to the status of Brahma, above all other gods.

Hindi: घरानों से पहले हमारे यहां प्राचीन काल से ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में गुरू शिष्य परम्परा का ही घोतक रहा है परन्तु आज के बदलते स्वरूप में वर्षो से चली आ रही परम्परा का मूल अस्तित्व कहीं खो सा गया है। निश्चय ही हमे अपनी संस्कृति की धरोहर को बचाने के लिए परस्पर चिन्तन मनन करने की आवश्यकता है जिससे हम संगीत के प्रगतिशील भविष्य को संवार सके। हमारी पीढ़ी में ऐसे अनेको कलाकार हुए है जिन्हें गुरुकुल पद्धति से शिक्षा मिली है और महान कलाकारों से शास्त्रीय संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष को भली भाँति सीखा। गुरू शिष्य परम्परा में गुरू केवल संगीत की शिक्षा ही नहीं बल्कि शिष्य को जीवन के दर्शन भी कराता था और सम्पूर्ण दर्शन से शिष्यों के भीतर विभिन्न संस्कार भी जागृत करता था । वर्तमान में जब गुरु शिष्य का सम्बन्ध पिता-पुत्र से बढ़कर माना जाता है यहाँ तक की समस्त देवताओं से ऊपर ब्रम्हा का स्थान भी गुरु को दिया गया।

Keywords: Music, Guru-Shishya, Tradition, Gurukul, Gharana, Teaching System संगीत, गुरू-शिष्य, परम्परा, गुरूकुल, घराना, शिक्षण प्रणाली

*Corresponding Author:
Email address: Vilas Palkhe (tablaguru11@gmail.com)
Received: 26 April 2026; **Accepted:** 28 May 2026; **Published** 30 June 2026
DOI: 10.29121/ShodhShreejan.v3.i1.2026.79
Page Number: 137-141
Journal Title: ShodhShreejan: Journal of Creative Research Insights
Journal Abbreviation: ShodhShreejan J. Creat. Res. Insights
Online ISSN: 3049-074X, **Print ISSN:** 3108-3072
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

प्रस्तावना

घरानों से पहले हमारे यहां प्राचीन काल से ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में गुरू शिष्य परम्परा का ही घोतक रहा है परन्तु आज के बदलते स्वरूप में वर्षो से चली आ रही परम्परा का मूल अस्तित्व कहीं खो सा गया है। निश्चय ही हमे अपनी संस्कृति की धरोहर को बचाने के लिए परस्पर चिन्तन मनन करने की आवश्यकता है जिससे हम संगीत के प्रगतिशील भविष्य को संवार सके। हमारी पीढ़ी में ऐसे अनेको कलाकार हुए है जिन्हें गुरुकुल पद्धति से शिक्षा मिली है और महान कलाकारों से शास्त्रीय संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष को भली भाँति सीखा। गुरू शिष्य परम्परा में गुरू केवल संगीत की शिक्षा ही नहीं बल्कि शिष्य को जीवन के दर्शन भी कराता था और सम्पूर्ण दर्शन से शिष्यों के भीतर विभिन्न संस्कार भी जागृत करता था । वर्तमान में जब गुरु शिष्य का सम्बन्ध पिता-पुत्र से बढ़कर माना जाता है यहाँ तक की समस्त देवताओं से ऊपर ब्रम्हा का स्थान भी गुरु को दिया गया।

इसलिए यह कहा गया है-

गुरूरब्रम्हा गुरूरविष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः;
गुरू;साक्षात् परंब्रम्ह तस्मैं श्री गुरूवेनम;

अर्थात गुरूरब्रम्हा ;सृष्टि कर्ताद्ध के समान है, गुरू विष्णु ;संरक्षकद्ध के समान है, गुरू प्रभु महेश्वर के समान है, सच्चा गुरू आंखो के समक्ष सर्वोच्च ब्रम्ह है। वर्तमान में आज भी संगीत की शिक्षा गुरू-शिष्य परम्परा के माध्यम से ही संभव है इसीलिये गुरू की महिमा गान के उदाहरण यत्र-त्रत्र मिलते रहते हैं। आज के युवा गुरू-शिष्य के महत्व को नहीं जानते जिसके फलस्वरूप मैंने गुरूकुल और गुरू-शिष्य परम्परा शिक्षण प्रणाली एंव आधुनिक संगीत शिक्षण दोनों का मिश्रण करके एक ऐसी नई संगीत शिक्षण पद्धति को लागू करके विद्यार्थियों को संगीत शास्त्र के अलावा योग्य गुरूओं द्वारा संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष का भी ज्ञान कराना चाहिये। उन्हें सही मार्ग दर्शन देकर संगीत के उत्कृष्ट मंच प्रदर्शन हेतु योग्य कलाकार बनाने का प्रयास करना चाहिये। जिससे हम संगीत के प्रगतिशील भविष्य को संवार सके।

गुरू शिष्य संगीत शिक्षण पद्धति

में गुरू शिष्य और साधना ये तीनों शब्दों का इस परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। प्राचीन काल में संगीत शिक्षा व्यक्तिगत थी संस्थागत नहीं। गुरू शिष्य की तीव्रता, लगन और निष्ठा इत्यादि को गुणों की कसौटी पर खरा उतरने के बाद ही शिष्य का चुनाव किया करते थे। गुरू कृपा होने के पश्चात् ही शिष्य को विद्या प्राप्त होना संभव माना जाता था। इस परीक्षा के बाद ही गुरू भी शिष्य को खुले हृदय से विद्या दान किया करते थे। इसमें कोई संदेह नहीं।

हमारी गुरू-शिष्य परम्परा कितनी पुरानी है यह तो बता पाना बहुत मुश्किल है क्योंकि यह हमारे संगीत की ही नहीं बल्कि हमारे जीवन के सभी अंगों में समाहित है जिसमें गुरू के प्रति श्रद्धा हमारी भारतीय संस्कृति और परम्परा का ही परिचायक है। गुरू शिष्य संगीत परम्परा में गुरू मुख से संगीत की विद्या हस्तांतरित की जाती थी इसके लिये गुरू या उस्ताद शिष्य से गंडा बंधन किया करते थे। शिष्य को गुरू के पास रहकर गुरू की सेवा करनी पडती थी। संगीत विषय में गुरु का एक विशिष्ट योगदान माना जाता है यही एक ऐसी कला है जिसको गुरु के बिना इस विद्या को समझना बहुत ही मुश्किल सा प्रतीत होता है गुरु शिष्य की उन कमजोरियों को दूर करते है जो उन्हें संगीत की शिक्षा प्राप्त करने से ही जाती है। प्रारम्भ में ही गुरु रियाज के तरीके, स्वरों का लगाव, स्वरों का उच्चारण, अन्य सांगितिक पहलूओं को बताता है जो नितान्त आवश्यक है। मेरे स्वयं के अनुभव से मैंने पाया की गुरु संगीत वास्तव में एक गुरूमुखी विद्या है जो हमें गुरू' के समक्ष बैठकर ही आती है। परंतु वर्तमान में नई पीढ़ी में इस पद्धति का ज्ञान ना होने के कारण गुरू शिष्य परम्परा का स्तर झुक सा गया है।

संगीत में घराना परम्परा

कालांतर में गुरुकुल व्यवस्था से निकलकर संगीत शिक्षा घरानों के रूप में विकसित हुई। जिसके कारण भारतीय संगीत की वास्तविकता को क्रियात्मक प्रदर्शन द्वारा ऊँचा ले जाने का श्रेय आज भी गुरु शिष्य शिक्षण प्रणाली को ही जाता है। उत्तम विधा का दान करने की परम्परा अर्थात गुरु शिष्य परम्परा भारतीय संगीत में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं।

संगीत के प्रत्येक घरानों में भी गुरू शिष्य-परम्परा द्वारा ही संगीत में निरन्तरता प्राप्त की है चाहे वह ग्वालियर घराना, आगरा, दिल्ली, जयपुर, किराना आदि घराने हो। इन सभी घरानों में कलाकार बनने के लिए कितने गुरूओं का सानिध्य प्राप्त किया है। गुरू शिष्य परम्परा को बढ़ावा में घरानों का बहुत योगदान रहा है । घरानेदार गायकी भी गुरुकुल पद्धति से कहीं न कहीं सम्बन्ध रखती है जैसे गुरुकुल में रहकर गुरु की सेवा करने से समस्त ज्ञान की प्राप्ति होती थी वैसे ही घरानों में भी शिष्य गुरु की शरण प्राप्त कर उनके बताये मार्ग दर्शन पर चलता जिससे उसके संगीत शिक्षण में स्थिरता, नियमित्ता, गुरू अनुशासन, जीवन के दर्शन आदि को गुरू से सिखकर अपने जीवन में आत्मसात करता था गुरू के संगीत सम्बन्धित कठोर नियमों का पालन करके ही एक शिष्य कलाकार की श्रेणी में आ जाता था। गुरू तब तक अपने शिष्य को मंच प्रस्तुति नहीं करने देते थे जब तक की विद्यार्थी उसमें पटु न हो जाए। गुरू महिमा अपरमपार कह देने मात्र से गुरू के ज्ञान का पता नहीं चलता बल्कि उनकी सेवा और उनके मार्गदर्शन पर ही उनके शिक्षण का ज्ञान होता है।

घराना का अर्थ

सामान्य बोल चाल की भाषा में घराना शब्द का अर्थ घर, परिवार या कुटुम्ब से लगाया जाता है लेकिन संगीत में घराना का अर्थ है किसी संगीत शैली या वंश परंम्परा से है। जिसमें गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा किसी विशिष्ट संगीत शैली की शिक्षा दी जाती है। घराना अर्थात पद्धति स्कूल या एक निश्चित परंपरा। संगीत में घराना कलाकारों का एक ऐसा परिवार है जिसकी प्रत्येक इकाई में उसके मुखिया की छाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

घरानों की नींव

मानव स्वभाव ने जब किसी कलाकार विशेष में कुछ अदभुत विशिष्ट प्रतिभा और विशेष मौलिकता देखी होगी, उसकी संरचनात्मक शक्ति में किसी विशिष्ट प्रकार की सौन्दर्य कल्पना निजी सोच की क्षमता देखी होगी तो स्वाभाविक रूप से वह कलाकार उसका आदर्श बन गया होगा। उसकी विशिष्ट मौलिकता पर आसक्त होकर शिष्य के रूप में उसका अनुकरण व एक संगीत रसिक के रूप में उसका आदर करने लगा हो।

घरानों का उद्भव

वैदिक काल में भारतीय संगीत प्रणाली को देखें तो एक बात निश्चित है कि धु्रपद गायकी से पूर्व भी भरत मत,शिव मत, नारद मत और हनुमंत मत ये चार मत चलन में थे, जो घराने के रूप में ही देखे गये।

संगीत में घरानों की शुरूआत कब हुई यह ठीक-ठीक बताना मुश्किल है परंतु ऐसा माना जाता है कि घरानों की शुरूआत मुगल काल के अंत में हुई। घराना शब्द से तात्पर्य ऐसी गुरू शिष्य परम्परा जो पिछली चार पीढियों से चली आ रही हो जिसकी गायन व वादन की अपनी विशेष शैली हो घराना कहलाती है। प्रत्येक घराने की अपनी गायन या वादन शैली होती है तथा उनकी अपनी अलग-अलग विशेषताऐं होती हैं। वर्तमान समय में ख्याल गायन के क्षेत्र में जिन्हें ग्वालियर घराना, आगरा घराना, किराना घराना व पटियाला घराना तथा तबले में दिल्ली, लखनऊ, बनारस, पंजाब, अजराडा व फरूर्खाबाद घराने के नाम से जाना जाता है। परंतु समय के चलते घराना परम्परा में कुछ दोष व कुछ कमियां आ गयीं।

श्री भगवत शरण शर्मा के अनुसार-

“अशिक्षित कलाकारों की संकीर्ण मनोवृति के फलस्वरूप संगीत के क्षेत्र में घरानों की नींव पड़ गयी जिसकी परिपाटी ने संगीत के विकास को अवरूद्ध कर दिया और उसके सार्वभोम व सनातन सिद्वातों को गहरी क्षति पहुंची।“

इस कथन में कोई संदेह नहीं है परंतु अनपढ व अशिक्षित कलाकार अप्रतिम कौशल व तीव्र स्मरण शक्ति के धनी थे। परंतु ये अपनी संगीत शिक्षा केवल अपने घर परिवार के सदस्यों को ही दिया करते थे। एक विद्यार्थी किसी घराने से सीख रहा है तो वह दूसरे घराने की बंदिश नही गा सकता था। जिसके फलस्वरूप संगीत का विकास अवरूद्ध हो गया।

आधुनिक संस्थागत संगीत शिक्षण पद्वति

संस्थागत संगीत शिक्षण की शरूआत का श्रेय मुख्य रूप से महान संगीत मनीषि व महान संगीत साधक पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर व पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे जी को दिया जाता है। जिन्होंने जन-सामान्य तक संगीत शिक्षा को पहुंचाने में अपनी अहम भूमिका निभाई। उन्होंने संगीत में नोटेशन सिस्टम को बनाकर संगीत की शिक्षा को सुलभ बना दिया ताकि संगीत को आम जनता तक पहुंचाया जा सके। इसके लिये उन्होंने विद्यालयों व महाविद्यालयों सुलभ व सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम लागू करवाया जाये। उन्होंने 5 मई 1901 को लाहौर में प्रथम संगीत महाविद्यालय की स्थापना की। इसके पश्चात सन् 1908 में पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने बम्बई में गांधर्व महाविद्यालय की एक शाखा खोली। क्रियात्मक संगीत को लिपिबद्ध करने के लिये भातखंडे जी ने सुलभ और नवीन स्वरलिपि की रचना की, जो भातखंडे स्वरलिपि प्रणाली के नाम से प्रसिद्ध है। भातखंडे जी ने एक नवीन प्रकार-राग वर्गीकरण को प्रचारित किया व उसे वैज्ञानिक ढंग समस्त रागों को 10 थाटों में विभाजित किया तथा संगीत की कई मासिक पत्रिकाएं भी प्रकाशित की।

जिस समय हमारे देश में रेडियो, टी0वी0, टेप रिर्काडर आदि नहीं थे। तो उस समय भातखंडे ने संगीत के प्रचार-प्रसार हेतु संगीत सम्मेलन की आवश्यकता महसूस की और सन् 1916 में बडौदा नरेश की सहायता से प्रथम संगीत सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किया । उसी संगीत सम्मेलन में अखिल भारतीय संगीत अकादमी स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। इसके बाद पं0 भातखंडे जी ने कई संगीत विद्यालयों की स्थापना की।

इस सब के बाद संगीत के प्रचार हेतु भातखंडे जी ने अगला कदम बढाया सभी विद्यालयों व महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा का पाठ्यक्रम रेगुलर विषयों के साथ जोड़ना।

इन सब के बाद संगीत विषय सभी विद्यालयों व महाविद्यालयों में पढाया जाने लगा तथा और विषयों की भाति संगीत की भी नियमित कक्षाएं शुरू की गयी व पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया व संगीत शास्त्र (Theory)की परिक्षाएं भी आयोजित होने लगीं।

सर्वप्रथम महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि संगीत विषय लेने से पहले विद्यार्थी का चुनाव, विद्यालय में संगीत विषय सिखाने से पहले संगीत कला में कुछ विशेषता हासिल करने के लिये आवाज का गुणधर्म और प्रवृति और आर्थिक स्थिति के आधार पर विद्याथियों का चयन करना तथा विद्यालय में उनके रहने खाने का उचित प्रबंध करना। विद्यार्थियों को तय समय सारणी के अनुसार कक्षा में उपस्थित होना पड़ता है जिसमें अन्य विषयों की भी कक्षाएं होती है। छात्रों की संख्या अधिक होने के कारण शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को समय नहीं दे पाते, जिससे संगीत सीखने की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है, विद्यार्थी का उदेश्य केवल परीक्षा उत्त्रीण करने का रह गया है। लेकिन विद्यार्थियों को महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में सेमीनार व संगीत सम्मेलन आयोजित होने से बड़े-बड़े उस्तादों का गायन वादन सुनने का सुनहरा अवसर अवश्य मिलता है।

आज संगीत का क्षेत्र विस्तृत् हो गया है। वर्तमान समय में संगीत के विद्यार्धियों को संगीत सीखने के अनेक माध्यम है जैसे इलेक्ट्रॅानिक मीडिया जैसे दूरदर्शन, एफ चैनल्स, यूटूब चैनल म्यूजिक चैनल्स, प्रौडेक्शन हाउस,म्यूजिक रिसर्च ऑग्नाइजेशन, एजुकेशन इंस्टीटयूट, गर्वन्मैंट कल्चर डिपार्टमेंट, इन सभी क्षेत्रों में असीमित संभावनाएं हैं, बस आवश्कयता तो धैर्य पूर्वक लगन के साथ कठोर परिश्रम, आत्म विश्वास व सचेत रहने की।

इन सब के बावजूद ऐसा लगता है कि संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली कलाकारों को उत्पन्न करने के लिये पूर्णतरू योग्य नहीं है। इसके लिये गुरू शिष्य संगीत शिक्षण प्रणाली ही सर्वश्रैष्ठ मानी जा सकती है। विद्यालय व महाविद्यालय में विद्यार्धियों को संगीत शिक्षण के साथ-साथ किसी योग्य गुरू से भी संगीत शिक्षा लेना आवश्यक है।

ये हमारा व हमारे देश का गौरव है कि इस भूमि पर महान कलाकारों ने जन्म लिया और देश-विदेश में भारतीय संगीत का परचम लहराया।

शास्त्रीय संगीत के क्षैत्र में कई महान विभूतियों ने जन्म लिया जिसमें आदरणीय पूज्य पं0 विष्णु दिगंबर पलुसकर, पं0 भातखंडे, प0 रातंजनकर , पं0 सवाई गंधर्व,1600 पं0 कुमार गधर्व, पं0 जितेन्द्र अभिषेकी, वसंतराव देशपांडे, पं0 भीमसेन जोशी, पं0 जसराज, विदूषी गंगूबाई हंगल, हीराबाई बडोदकर, किशोरी अमोनकर , गिरिजा देवी, प्रभा अत्रे,उ0 अल्लाउद्दीन खा, पं0 रवी शंकर ,उस्ताद बिस्मिल्लाह खा, उ0 अहमद जा थिरकवा , उ0 अल्ला रख्खा, पं0 किशन महाराज, उ0 जाकिर हुसैन आदि ऐसे अनेक महान कलाकर हुए जिन्होंने केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में भारतीय शास्त्रीय संगीत की पताका फहरयी, इसके अलावा कई कलाकारों ने विदेशी वाद्यों पर क्लासिकल संगीत सफलतापूर्वक बजाना शुरू किया, जिसमें मैंडोलिन वादक उप्पलापु श्री निवास उनको मैडोलिन श्रीनिवास भी कहा जाता था। श्रीनिवास ने पाश्चात्य वाद्य मैडोलिन में जिसमें 8 तार थे उसमें बदलाव करके 5 तारों के इलैक्ट्रिक मैंडोलिन का आविष्कार किया। इसी श्रंखला में पं0 विश्वमोहन भट्ट ने गिटार में कुछ परिवर्तन करके उसे शास्त्रीय संगीत में बजाने योग्य बनाया व उस गिटार का मोहन वीणा रखा व पूरे विश्व में भारतीय संगीत का प्रचार किया।

आज का दौर वैश्वीकरण का दौर है आज जब हर क्षेत्र में वैश्वीकरण हो रहा है तो संगीत कैसे अछूता रह सकता है। पहले समय में एक कलाकार किसी एक घराने का है तो वह किसी दूसरे घरानें की बंदिश नहीं प्रस्तुत कर सकता था, परंतु अब ऐसा नहीं है आज कलाकार किसी एक घराने में बंध कर अपनी कला का प्रदर्शन नहीं करता बल्कि जिस घराने की जो खूबी है जो विशेषताएं है उनको अपने गायन व वादन में समाहित करके अपनी प्रस्तुति देता है। एक उदाहरण के तौर हम देखे कि एक गुलदस्ते में एक रंग के फूल हो और दूसरे गुलदस्ते में अलग-अलग रंग के फूल हो तो स्वाभाविक है कि अलग-अलग रंग के फूलों का गुलदस्ता हमें अत्यंत आकर्षित करेगा। इसी प्रकार दो या तीन घरानों की खूबियों को साथ लेकर गायन या वादन किया जाये तो चित को अत्यंत आकर्षित करेगा व गायन व वादन में एक नवीनता दृष्टिगोचर होगी।

अब प्रश्न यह है कि आज जो संस्थागत संगीत शिक्षण की स्थिति है उसमें कैसे सुधार किया जा सकता है, या इस समस्या को कैसे दूर किया जाये।

इस विषय में कुछ तथ्यों के बारे में हम विचार विमर्श करेंगे।

मेरे दृष्टिकोण से वर्तमान में संगीत शिक्षण के लिये दोनों प्रणालियों ;गुरू-शिष्य संगीत शिक्षण प्रणाली व संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणालीद्ध मिश्रण करके संगीत शिक्षा की संस्थाएं हर जगह उपलब्ध होनी चाहिये, जिसमें सरकारी सहयोग के साथ-साथ संगीत रसिकों के सहयोग से चलती हों। जैसे पहले संगीत कलाकारों राजाश्रय प्राप्त होता था उनको दरबार में उचित स्थान भी दिया जाता था तथा उपहार स्वरूप द्रव्य भी दिया जाता था। जिससे उनके जीवन व्यापन की समस्या का समाधान भी हो जाता था। होनहार विद्यार्थियों को योग्य धुरंधर गुरूओं व उस्तादों से संगीत की तालीम दिलाने का प्रबंध किया जाना चाहिये। इस एक बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये कि विद्यार्थी की रूचि व क्षमता के अनुसार ही उसे उन योग्य कला गुरूओं से परम्परागत संगीत शिक्षा प्राप्त हो। ऐसी संस्थाओं में विद्यार्थियों का चयन बिना किसी भेद भाव के बिना किसी पक्षपात के उनकी योग्यता के आधार पर किया जाना चाहिये, जिनका खर्च छात्रवृत्ति के रूप में सरकार द्वारा व संस्था द्वारा वहन किया जाये। इसका परिणाम ये होगा कि गुरू-शिष्य परंपरा एक नये रूप में सजीव हो सकती है तथा विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से संगीत शिक्षा देने के कारण गुरू शिष्य के बीच एक बेहतर तालमेल स्थापित होगा तथा श्रद्धा का भाव भी बना रहेगा जो संगीत शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है। जिसकी आज सबसे बड़ी कमी है। व्यक्तिगत रूप से संगीत शिक्षा देने के कारण प्रत्येक विद्यार्थी का संपूर्ण विकास भी संभव है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि संगीत शिक्षा के लिये इन संस्थाओं को बिना किसी भेद-भाव के निष्पक्षता के साथ योग्य विद्यार्थी का चुनाव करना चाहिये जिससे उच्चकोटि के कलाकार उत्पन्न हो सकें जो संगीत की परम्परागत सनातन संस्कृति को जीवित रखने तथा आगे बढ़ाने में सक्षम हों क्यों कि योग्य विद्यार्थी ही योग्य कलाकार व गुरू बनकर संगीत के विद्यार्थियों को सही मार्ग दर्शन करके योग्य कलाकार बना सकते हैं जो देश-विदेश में अपना व देश गौरव बढ़ायेंगे ।

इसी क्रम में इस क्षेत्र में वर्तमान में ।TC संगीत रिसर्च एकेडमी कोलकता, अपनी मुख्य भूमिका निभा रही है। जो हमारे सामने एक प्रत्क्षय प्रमाण है।

अतः निष्कर्ष यह है कि हमें संगीत के विकास के लिये व संगीत की परम्परा को सुदृढ़ता के साथ कायम रखने तथा आगे आनी वाली पीढ़ी के लिये संगीत के विकास की यात्रा जारी रखने के लिये कुछ ठोस महत्वूर्ण कदम उठाने की अति आवश्यकता है।

सर्वप्रथम संगीत की जो भी पद्धतियां है जैसे- गुरू-शिष्य परंपरा, घराना परंपरा व आधुनिक संगीत संगीत शिक्षण पद्धति, इन तीनों पद्धतियों में जो भी खामियां है उनको अलग करके एक एसी संगीत शिक्षण पद्धति पर विचार कर उसे लागू कराने पर जोर देना चाहिये। आज घर-घर संगीत शिक्षण के निजी विद्यालय तो है लेकिन योग्य गुरूओं का अभाव है। उनका उद्धेश्य केवल धन अर्जित करना रह गया है। जो विद्यार्थी आज भी बड़े-बड़े शहरो जैसे बुम्बई, दिल्ली, कोलकता, बनारस, पुणे आदि में बड़े-बड़े गुरूओं तथा उस्तादों से व्यक्तिगत रूप से शास्त्रीय गायन वादन व नृत्य की शिक्षा ले रहे है वे निश्चित ही पूरे विश्व में अपना नाम रौशन कर रहे है। हमें घराना परंपरा, गुरू-शिष्य परंपरा व आधुनिक संगीत शिक्षण प्रणाली को मिश्रित करके एक नयी संगीत शिक्षण प्रणाली प्रचार में लानी होगी जिसमें घरानों का बंधन ना हो, जिस घराने की जो भी खूबियां व विशेषताएं है उनको अपने गायन व वादन व नृत्य में शामिल करना चाहिये जिससे मंच प्रस्तुति में चार चांद लग जायें तभी हम संगीत की धरोहर सुरक्षित रख पायेगे।

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Sharma, Manisha. (n.d.). Gharana Tradition and Institutional Teaching Method in Music (संगीत में घराना परम्परा एवं संस्थागत शिक्षण पद्धति). Radha Publication.

Bhadauriya, Alka Singh, and Bihari, Gagan. (n.d.). Gharana Tradition and Institutional Teaching in Indian music (भारतीय संगीत में घराना परंपरा और संस्थागत शिक्षण). Kanishka Publishers.

Chaudhary, Vimal Kant Rai. (n.d.). Guru-Disciple Tradition and Gharanas in Indian Classical Music (भारतीय शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परंपरा और घराने). Rajkamal Prakashan.

Chaudhary, Subhadra. (n.d.). Gharanas of Music and their Teaching Systems (संगीत के घराने और उनकी शिक्षण प्रणालियां). Krishna Brothers.

Garg, Lakshmi Narayan. (n.d.). Indian Music Teaching Methods: From Ancient to Modern Period (भारतीय संगीत शिक्षण पद्धतियां: प्राचीन से आधुनिक काल तक). Sangeet Karyalaya.

Mistry, Aban E. (n.d.). Gharanas and Traditions of Pakhawaj and Tabla (पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं). Swar Sadhana Samiti.